e-learning material prepared by Dr.Abha Jha

डॉ आभा झा

स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग, डी एस पी एम यू, रांची

लक्षणा तथा उसके विभिन्न भेद

भारतीय भाषा विश्लेषण के अंतर्गत शब्द के मुख्य अर्थ अथवा मौलिक अर्थ को अभिधा कहा गया है । जब किसी शब्द का मुख्य अर्थ बाधित होता है और एक नया अर्थ अभिव्यक्त होता है तो उसे लक्षणा कहते हैं जैसे-' वह मनुष्य शेर है ।' इस वाक्य में 'शेर' शब्द का मुख्य अर्थ अथवा अभिधा जंगलों में रहने वाला एक हिंसक जानवर है, किंतु मनु ष्य के संदर्भ में इस अभिधा अर्थ का प्रयोग नहीं हो सकता. यहां शेर का अर्थ बहादुर या वीर है. इस प्रकार यहां मुख्य अर्थ बाधित होते हुए जो अर्थ लिया गया है वह अभिधामूलक नहीं बल्कि लक्षणामूलक है.

लक्षणा अर्थ की आवश्यकता उस समय होती है जब वाक्य में प्रयुक्त पदों के अर्थों में संगति नहीं होती . जैसे - 'मंच क्रोधित है.' यहां इस वाक्य में मंच तथा क्रोध के अभिधामूलक अर्थ में अभाव है. अतः यहां मंच का लक्षणार्थ लेना आवश्यक है . मंच का अर्थ मंच पर आसीन व्यक्ति से है. इसके अतिरिक्त जिन वाक्यों का अर्थ उसमें प्रयुक्त पदों की तात्पर्य शक्ति से अभिव्यक्त होता है, जैसे- 'कौओं से दही की रक्षा करो. ' यहां कौओं का तात्पर्य उन सभी पशु पक्षियों से है जो दही खा सकता है. यहां कौवा का तात्पर्य अर्थ उपस्थित करके ही वाक्य के सही अर्थ को जाना जा सकता है . इस प्रकार यहाँ भी लक्षणा अर्थ की आवश्यकता है . लक्षणा का मूल दो माना गया है -अन्वयानुपपत्तिऔर तात्पर्यानुपपत्ति । इन दोनों अनुपपत्तियों के आधार पर ही लक्षणा के विभिन्न वर्गीकरण किए गए हैं जो इस प्रकार प्रकार हैं -

१. रूढ एवं प्रयोजनवती लक्षणा -

रूढ़ लक्षणा वह है जिसका प्रयोग निरंतर प्रचलन में रहता है जैसे- कुर्सी की बांह , मेज़ का पाँव ,सूई की आंख. प्रयोजनवती लक्षणा वह है जिसका अर्थ प्रचलित या प्रयोजन युक्त होता है. प्रयोजन का अर्थ तात्पर्य है .जैसे - 'गंगा में गांव है' । यहां' गंगा में गाँव ' का तात्पर्य गंगा के किनारे है. यह अर्थ प्रचलन में पाया जाता है ,इसलिए इसे प्रचलित प्रयोजनवती लक्ष'णा कहते हैं. किन्तु यदि ' गंगा में गांव है' का अर्थ ऐसे गांव से है जो गंगा के समान शांत, पवित्र और शीतल है तो इस अर्थ में स्पष्ट प्रयोजन निहित है.अतः इसे प्रयोजनवती लक्षणा कहा जाता है .रूढ लक्षणा का बीज अन्वयानुपपत्ति है, तो प्रयोजनवती लक्षणा का बीज तात्पर्यनुपपत्ति है.

२ . जहत लक्षणा , अजहत लक्षणा एवं जहदजहललक्षणा

जहत लक्षणा वह है जो किसी शब्द के मुख्य अर्थ को पूरी तरह बाधित करता है और एक नया अर्थ प्रदान करता है. जैसे - मंच क्रोधित है ,गैलरी शोर करता है,घी जीवन है . इन शब्दों के अर्थ से इनका अर्थ स्पष्ट नहीं होता. जब तक इनके लक्षणा अर्थ को नहीं बतलाया जाता ,इन वाक्यों को अर्थहीन माना जाएगा. इन वाक्यों का अर्थ है- मंच पर आसीन व्यक्ति क्रोधित है', गैलरी में

बैठा व्यक्ति शोर करता है, घी खाने से जीवन स्वस्थ रहता है. इन वाक्यों में प्रयुक्त पदों 'गैलरी , मंच, घी का अभिधा या मुख्य अर्थ पूरी तरह बाधित है और इनका स्थानापन्न अर्थ मनुष्य,जीवनदायी और मनुष्य है .यह अर्थ जहत लक्षणा कहलाता है.

अजहत लक्षणा वह है जिसमें मुख्य अर्थ तो बाधित नहीं होता किंतु मुख्य अर्थ से युक्त अन्य अर्थ अभिप्रेरित होता है . जैसे - 'कौओं से दही की रक्षा करो' . यहाँ ' कौवा ' शब्द का प्रयोग उसके लक्षणार्थ में किया गया है . कौवा का अर्थ कौवा सहित बिल्ली, कुत्ता, तोता आदि सभी पशु पक्षियों से है जो दही खाते हैं. इस वाक्य में अजहत लक्षणा पाई जाती जहदजहललक्षणा वह है जिसमें किसी शब्द का मुख्य अर्थ अंशतः बाधित होता है और अंशतः अन्य अर्थ से युक्त होता है. अर्थात जिस वाक्य का अर्थ उपर्युक्त दोनों लक्षणों द्वारा स्पष्ट होता है उसे जहदजहललक्षणा कहते हैं .उदाहरण के लिए- 'यह वह देवदत्त है .' इसमें दो वाक्य निहित हैं . पहला वाक्य है 'यह देवदत्त है'. दूसरा वाक्य है 'वह देवदत्त है'. पहला वाक्य वर्तमान काल से संबंध रखता है जबकि दूसरा वाक्य अतीत काल से संबंध रखता है ,और इस वाक्य का अर्थ है- जिसको अतीत काल में देखा गया था ,वही देवदत्त यह देवदत्त है . उपनिषदों एवं वेदांत दर्शन में अभिव्यक्त महावाक्य 'तत्वमसि' , 'अहम् ब्रह्मास्मि',आदि का अर्थ जहदजहललक्षणा द्वारा ही स्पष्ट होता है. 'तत्त्वमसि' का अर्थ है' वह तुम हो', अर्थात ' ब्रह्म आत्मा है' . यहां' वह' का अर्थ 'ब्रह्म' तथा ' तुम' शब्द' आत्मा 'के अर्थ में लिया गया है .यहां 'वह' अर्थात ब्रह्म का मुख्य अर्थ स्वीकार किया गया है लेकिन 'तुम' अर्थात आत्मा का मुख्य अर्थ बाधित हुआ है और इसके स्थान पर नया अर्थ लिया गया है. इस प्रकार इन महा वाक्यों का अर्थ जहदजहललक्षणा से ही स्पष्ट होता है .इस लक्षणा को 'भाग त्याग लक्षणा' भी कहा जाता है. भाग का अर्थ अंश से है. इसमें मुख्य अर्थ आंशिक रूप से बाधित तथा आंशिक रूप से अबाधित रहता है इसलिए इसे 'भागत्याग' कहा जाता है.

३.गौणी एवं शुद्ध लक्षणा

गौणी लक्षणा वह है जो मुख्य अर्थ की समानता पर आधारित होता है . जैसे- ' यह मनुष्य बैल है.' इस वाक्य का निहित अर्थ है- यह मनुष्य बैल के समान आलसी या सुस्त है. यहां दोनों के गुणों में जो समानता है उसे ही आधार बनाकर अर्थ निकाला जाता है तथा उनके भेद को दरकिनार किया जाता है ,इसलिए इसे गौणी लक्षणा कहते हैं.

शुद्ध लक्षणा वह है जो समानता के आधार पर नहीं बल्कि कारणता आदि के संबंधों के आधार पर किसी शब्द के अर्थ को अभिव्यक्त करता है, जैसे - 'घी जीवन है.' घी और जीवन में कोई समानता नहीं है .यहां घी का अर्थ जीवन का संरक्षण करने वाले को कहा गया है. इसी अर्थ में घी को जीवन कहा गया है. इसलिए इस अर्थ को शुद्ध लक्षणा कहते हैं. गौणी लक्षणा में एक शब्द पर दूसरे शब्द के अर्थ को आरोपित किया जाता है.

'यह बालक आग है'. अर्थात यह बालक आग के समान प्रखर बुद्धि वाला तेजस्वी है, गौणी लक्षणा का उदाहरण है.

४.उपादान लक्षणा एवं लक्षण लक्षणा

जो अपनी सिद्धि के लिए अथवा अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए दूसरे की अपेक्षा करता है उसे उपादान लक्षणा कहते हैं . जब किसी वाक्य में प्रयुक्त किसी पद का अर्थ तब स्पष्ट हो जब उस पद के साथ कोई दूसरा पद जुड़ जाए . हम अपने दैनंदिन जीवन में इस तरह के वाक्यों का प्रयोग करते रहते हैं .जैसे- रिक्शा लाओ, स्कूटर गया , इन वाक्यों का अर्थ क्रमशः रिक्शावाला लाओ ,स्कूटर वाला गया, आदि है.

लक्षण लक्षणा वह है जो वाक्य में प्रयुक्त शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए उस शब्द के मुख्य अर्थ का पूर्णतः त्याग करता है तथा अन्य अर्थ को लेता है. वह अन्य अर्थ लक्षण लक्षण कहलाता है. इसे लक्षित लक्षणा भी कहते हैं . जैसे - 'बंगाल बहादुर है' यहां बंगाल का अर्थ उस राज्य के निवासियों से है, जिसे बंगाली कहा जाता है. इस वाक्य का अर्थ' बंगाली बहादुर है' है. इसी प्रकार' भ्रमर घूमता है ' कहा जाए तो इसका अर्थ उस व्यक्ति से है जो पर्यटक के रूप में घूमता रहता है. भ्रमर का मुख्य या अभिधा अर्थ भंवरा है किन्तु लक्षणा अर्थ पर्यटक है . यहां भ्रमर एक स्वयं लक्षणा के रूप में के रूप में प्रयुक्त है, इसलिए इसे लक्षित लक्षणा कहते हैं.

५.सारोपा एवं वासना लक्षणा

जब किसी वाक्य में प्रयुक्त शब्द का अर्थ अन्य शब्द के अर्थ के आरोप या आक्षेप द्वारा अभिव्यक्त होता है और वह अन्य शब्द मूल शब्द के अर्थ को नहीं निगलता है ,तो उसे सारोपा लक्षणा कहते हैं. इसमें शब्द का मूल अर्थ बना रहता है किंतु वाक्य के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए उस शब्द में अन्य शब्द का आरोप अथवा आक्षेप किया जाता है. आरोपित अर्थ सारोपा लक्षणा है.

जैसे-' भोजन ईश्वर है' यहां' भोजन' का मूल अथ बनाए रखकर उस पर अन्य अथ अथात ईश्वर को आरोपित किया गया है अर्थात भोजन तथा ईश्वर में तादात्म्य संबंध दिखाया गया है.इस प्रकार तादात्म्य भाव से अभिव्यक्त लक्षण सारोपा लक्षणा कहलाता है.

साध्यवासना लक्षणा वह है जिसमें आरोपित या अपेक्षित शब्द मूल शब्द के अर्थ अथवा अभिधा को पूर्णतः निगल जाता है और अन्य अर्थ अभिव्यक्त करता है. उदाहरण के लिए- ' कांटो को नष्ट करो '. यहां काँटों का अर्थ जंगल, झाड़ी या गुलाब के पौधे का कांटा नहीं है बल्कि' कांटा' शब्द का लक्षणार्थ 'दुश्मन' है. इसलिए इस वाक्य का अर्थ' दुश्मनों को नष्ट करो' है . यहां' कांटा' और 'दुश्मन' में तादात्म्य भाव नहीं है किंतु समानता अवश्य है क्योंकि कांटा और दुश्मन दोनों ही कष्ट कारक है. इस प्रकार यहां दुश्मन शब्द काँटा शब्द के अर्थ को पुर्णतः निगल जाता है. कांटा आरोप्य है और दुश्मन आरोपित है. यह साध्यवासना लक्षणा का उदाहरण है.

.....

.

है

This document was printed from dictation.io